बालमन कुछ कहता है 12

चालाक लोमड़ी और कौआ

शिराली रुनवाल*

कहानी सुनना बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। एक ही कहानी बच्चों को कई तरह से सुनायी जा सकती है। अलग-अलग विधाओं में बदलकर कहानी सुनाने से न केवल बच्चों को आनंद मिलता है बल्कि उन्हें साहित्य की नाना विधाओं की जानकारी भी हो जाती है। इसके साथ ही उन्हें यह भी ज्ञात हो जाता है कि एक कहानी/घटना को अलग-अलग रूपों में किस तरह से प्रस्तुत किया जा सकता है। चालाक लोमड़ी और कौआ दोनों ही अपनी चालाकी के लिए जाने जाते हैं। इन दोनों की इसी चतुराई के कई किस्से मशहूर हैं। कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों से ही कविता को कहानी तथा कहानी को कविता या नाटक आदि विधाओं में लिखने को कहा जा सकता है। एक बारहवीं कक्षा की छात्रा की ही लिखी कविता यहाँ दी जा रही है।

एक लोमड़ी बड़ी चतुर
हड़प विधा के जाने गुर
देखा कौए को लिए पनीर
पाने को हो उठी अधीर!

ललचाए मुख टपकी लार
हुई कमर कसकर तैयार
किंतु करटक बड़ा सयाना
सरल न था उसको भरमाना!

सोचा जमकर करूँ बढ़ाई
निहित इसी में है चतुराई
बोलूँ इक भी शब्द न रूखा
कौन नहीं तारीफ़ का भूखा?

मतलब की तब बात चलाई
ओ मेरे मुँहबोले भाई!
जितने तेरे पर चमकीले
उससे बढ़कर बोल रसीले।

* बारहवीं कक्षा की *छात्रा*, ए.एम.आई.ए. शिशु मंदिर, ग्वालियर, मध्यप्रदेश

मन आज है बहुत उदास
तोड़ न देना मन की आस
मीठा-सा इक गीत सुना दे
'पॉप' नहीं रीमिक्स ही गा दे।

सुन कागा कुप्पे-सा फूला
ख़्वाबों के झूले में झूला
हुआ वो गाने को बैचेन
चमक उठे बहना के नैन।

खुली चोंच तो गिरा पनीर
सही निशान पर लगा था तीर
अगली ने झट लिया दबोच
कौआ डूबा गहरी सोच।

खाकर बोली टुकड़ा ताज़ा
धन्यवाद ओ कौए राजा!
न केवल मेरा दिल बहलाया
भोजन भी भरपेट खिलाया।

वाक्-जाल में फँसकर
लोगों की मत मारी जाती
जीती बाजी तक दुर्जन के
हाथों देखो, हारी जाती!

इसीलिए सब रखना याद
नहीं कुबूलो झूठी दाद
इस दलदल में जो भी गड़ता
आख़िर पछताना पड़ता।

"जब मैं पढ़ता हूँ और तब दुनिया को समझ रहा होता हूँ और जब दुनिया को समझ रहा होता हूँ तो खुद को भी समझ रहा होता हूँ।"

पाउलो फ्रेरे

बालमन कुछ कहता है

मेरा विद्यालय

मेरा नाम लक्ष्य है। मैं पाँचवी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे अँग्रेजी, गणित और साइंस मेरे प्रिय विषय हैं। मेरा सबसे अच्छा दोस्त आयुष है।

विद्यालय में अधिक विषय होने के कारण मेरा बैग बहुत भारी हो जाता है। जिसे उठाने में मुझे बहुत मुश्किल होती है।

हमारे विद्यालय में खेल के मैदान के पास पानी की व्यवस्था है। खेल का पीरियड खत्म होने के बाद हमलोग वहाँ से पानी पीते हैं।

हम विद्यालय से साल दूसरी जगह घूमने जाते हैं। जिसमें बहुत मजा आता है।

लक्ष्य दहिया
पाँचवी कक्षा
न्यू ग्रीन फील्ड स्कूल
साकेत

बालमन कुछ कहता है

मुझे चीटियाँ बीलकुल भी
पसंद नही हैं कयोकि वो दूसरा
के खाने मे घुस जाती हैं और
पूछती भी नही । है

एकाग्रता
II A